एक राष्ट्रीय शासक के रूप में अकबर का मूल्यांकन करें

अकबर का व्यक्तित्व उदार और प्रभावशाली था तथा उसका व्यक्तित्व एक महान् व्यक्ति और एक महान् बादशाह का व्यक्तित्व था। अकबर परिश्रम करने तथा कठिनाइयों को बर्दाश्त करना उसका स्वभाव था। उसने अनेक अवसरों पर युद्ध में अपने स्वयं के जीवन को संकट में डाला था। अकबर शिक्षित न था परन्तु विभिन्न विषयों के निकट सम्पर्क में आकर उसने दर्शन, धर्म, साहित्य, इतिहास आदि विभिन्न विषयों शास्त्रों का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

उस युग में जबकि सम्पूर्ण विश्व धार्मिक कट्टरता और रूढ़िवादिता से ग्रस्त था, भारत में मुगल सम्राट अकबर ने धर्मनिरपेक्षता और आगे चलकर उससे भी आगे दीन-ए-इलाही के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। इन कारणों ने जहाँ अकबर को राष्ट्रीय सम्राट बनने के मार्ग पर अग्रसर कर दिया तो वहीं अकबर के अन्य कार्यों ने उसे वास्तविक रूप में राष्ट्रीय सम्राट ही बना दिया।

अकबर ने केवल हिन्दू राजकुमारियों से विवाह तथा धर्मनिरपेक्षता (तीर्थयात्रा कर जजिया जबरन मुसलमान बनाने आदि की प्रथाओं की समाप्ति) का ही कार्य नहीं किया वरन् उसने बिना किसी भेदभाव के सरकारी उच्च नौकरियों के द्वार सभी धर्मों के लिए खोल दिए तमाम सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न किया। एक समान कानून भूमि व्यवस्था तथा न्याय व्यवस्था की स्थापना पूरे देश में की। अकबर ने फारसी को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिया और हिन्दुओं को फारसी के अध्ययन के लिए प्रोत्साहित भी किया। अकबर ने एक सामान्य प्रशासनिक संस्थाएं तो स्थापित की ही थी उसने सेना को भी राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया। ~~राजा~~ टोडरमल, ~~राजा~~ बीरबल, ~~राजा~~ मानसिंह ~~राजा~~ भारमल आदि कुछ गिने-चुने नाम नहीं हैं वरन् ऐसे हिन्दू नामों की एक लम्बी सूची है जो अकबर के शासनकाल में उच्चतम सरकारी पदों पर थे।

अकबर ने जिस उदार और नवीन सिद्धान्तों को जन्म दिया था उनमें सर्वप्रमुख हिन्दू और मुसलमानों को निकट लाने का था। यह नहीं कहा जा सकता कि इस दिशा में उसका प्रयत्न पूर्णतः सफल रहा परन्तु वह पहला मुस्लिम शासक था जिसने इस आवश्यकता को समझा और उसके लिए कुछ ठोस कदम उठाये।

सांस्कृतिक विकास

अकबर ने भारत की सांस्कृतिक एकता की उन्नति के लिए प्रयत्न किये। उसके काल में नए मंदिरों का निर्माण हुआ और पुरानों का जीर्णोद्धार हुआ. अकबर ने ललित कलाओं की विभिन्न पद्धतियों के समन्वय और उनकी उन्नति के लिए प्रयत्न किये। कला के क्षेत्र में भी राष्ट्रीयता का प्रदर्शन किया. उसने चित्रकला को इस्लाम के विरुद्ध कहने की परवाह न करते हुए विकास के अवसर प्रदान किए और उसे अल्लाह के नजदीक जाने का रास्ता बताया. इसी प्रकार स्थापत्य कला में हिन्दू, बौद्ध, जैन, ईसाई तथा पारसी शैली का समावेश इस्लामिक शैली में करके एक नई राष्ट्रीय शैली का प्रतिपादन किया जिसका उदाहरण आगरे के किले की अकबरकालीन इमारतें और फतहपुर सीकरी स्थित इमारतें हैं।

सामाजिक सुधार

अकबर ने अनेक सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने का प्रयत्न किया। सती-प्रथा, बाल-विवाह, ~~वृद्ध~~ बहु-विवाह आदि को रोकने का उसने प्रयत्न किया। उसने 12 वर्ष की आयु से पहले ही खतना करने की प्रथा को रोका। धार्मिक कट्टरता और अन्धविश्वास को समाप्त करने का प्रयत्न किया। सभी धर्मावलम्बी अपनी पूजा, उत्सव आदि करने के लिए स्वतन्त्र ही न थे बल्कि बादशाह स्वयं होली, दीवाली, बसन्त आदि जैसे महत्वपूर्ण त्यौहारों और उत्सवों में भाग लिया करता था।

निष्कर्ष

यदि हम संक्षेप में कहें तो अकबर ने, मुगलों के विदेशी होने की बात मिटाकर, मुसलमानों को भारतीय बना दिया और स्वयं को भारत को समर्पित कर दिया. उसने नए सिद्धान्त 'भारत भारतीयों के लिए' का अघोषित प्रतिपादन कर दिया. वास्तव में सम्पूर्ण मध्यकालीन इतिहास में अकबर ही एकमात्र शासक है जिसको कुछ विरोधी बातों के होते हुए भी 'राष्ट्रीय शासक' का स्थान प्रदान किया गया है अकबर की महानता का सबसे बड़ा यही कारण है। के. टी. शाह लिखते हैं: "अकबर मुगलों में सर्वश्रेष्ठ और सम्भवतया, शक्तिशाली मौर्यों के पश्चात् एक हजार वर्ष के भारतीय शासकों में सबसे महान था।"

चूँकि अकबर को एक राष्ट्रीयकरण के प्रयत्नों में उसे पूर्ण सफलता नहीं मिली और भारत एक राष्ट्र की भावना प्राप्त न कर सका यह अन्य बात है। इसी कारण उसे राष्ट्र-निर्माता नहीं पुकारा जाता परन्तु उसकी नीति, भावना और प्रयत्नों के कारण मध्य युग के शासकों में उस अकेले को ही राष्ट्रीय सम्राट का सम्मान प्रदान किया गया है।